एक कठघरा—दो परिवार

(कठपुतली नाटक)

इन्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ़ मास कम्यूनिकेशन
नई देहली

EK KATHGHARA—DO PARIWAR

(A puppet play on Bangla Desh and after)

Produced by :

Indian Institute of Mass Communication

एक कठघरा – दो परिवार

कठपुतली नाटक

1972

इन्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ़ मास कम्यूनिकेशन
डी-13, साऊथ एक्सटेन्शन, पार्ट-II,
नई देहली

परिचय

आज़ादी के बाद देश की तरक़्क़ी के लिये पाँच साला योजनायें बनीं। देश की तरक़्क़ी का अर्थ है जनता की तरक़्क़ी। जनता व्यक्तियों का समूह है। देश की उन्नति व्यक्तियों के सामूहिक सहयोग पर ही सम्भव है। सहयोग तभी सम्भव है जब जनसमूह योजनाओं का अर्थ समझे, अपनाये और उन पर अमल करे। वे कौन से साधन हैं जो जल्दी से जल्दी भारतीय जन समूह को तरक़्क़ी का अर्थ समझा सकते हैं ? इस प्रश्न का उत्तर आसान लगता है : रेडियो द्वारा, किताबों द्वारा, अख़बार द्वारा, फिल्मों द्वारा, टी. वी. द्वारा। आज के वैज्ञानिक युग में क्या सम्भव नहीं ?

किन्तु इस देश में कितने ऐसे हैं जो क़िताबें और अख़बार पढ़ सकते हैं ? साक्षरों की संख्या क्या है ? ५५ करोड़ की आबादी में कितने रेडियो सेट हैं, क्या फ़िल्में जन-समूह तक पहुँचती हैं ? टी. वी. की पहुँच क्या है ? पिछले पाँच वर्षों में, जब से मास कम्यूनिकेशन संस्थान की स्थापना हुई है, यह इन्हीं प्रश्नों की गुत्थी में उलझा हुआ है। हर खोज का एक ही परिणाम निकला है : भारत में वैज्ञानिक साधनों की पहुँच बहुत ही सीमित है। चाहे वे क़िताबें हों या अख़बार, रेडियो हो या फ़िल्म, सभी भारतीय जन समूह के एक छोटे हिस्से तक ही पहुँचते हैं। जहाँ पहुँचते हैं वहाँ उनका क्या प्रभाव होता है, हमें इस प्रश्न की खोज करनी है।

तरक़्क़ी करना है तो देश के जनसमूह तक पहुँचना बहुत ज़रूरी है। इस कार्य के लिए क्या ऐसे भी साधन हैं जो कि जनसमूह के जीवन से जुड़े हुए हैं। भारत नया देश नहीं है। सदियों से इस देश की जनता सामूहिक रूप से हँसती, खेलती, गाती और नाचती रही है। क्या इनके जीवन के इन मनोरंजनों को साधन बनाया जा सकता है ?

किन्तु इतने बड़े देश में कोई एक साधन पूरे देश के जनसमूह का मनोरंजन साधन तो है नहीं ? वे साधन कौन और कितने हैं यह स्वयं एक खोज का विषय है। संस्थान इस दिशा में भी सचेत है। किन्तु तब तक क्या एक विशेष साधन का प्रयोग एक्सपेरीमेन्टल रूप से करना सम्भव है ? इस प्रयोग के लिये कठपुतली क्यों चुनी गई है ? कठपुतली यद्यपि एक विशेष क्षेत्र और समाज की परम्पराओं से बंधी है; फिर भी यह देश के किसी भी हिस्से में प्रयोग की जा सकती है। यह सकूनत, क़ौमियत और मिल्कियत से दूर है।

कठपुतली नाटक—**एक कठघरा-दो परिवार** आपकी सेवा में पेश है। नाटक की कथा किसी विशेष क्षेत्र या हिस्से से सम्बन्धित नहीं है। यह अपने देश और इन्सानियत से सम्बन्धित एक घटना है।

इस नाटक की विचार-सज्जा प्रो० एन. एन. पिल्ले की देन है। ये संस्थान के ट्रेडिशनल मिडिया विभाग के अध्यक्ष हैं, साथ ही मलयालम भाषा में ओंमचेरी के नाम से प्रख्यात नाटककार भी हैं। चरित्र संवाद और रूप दिया है डा० श्याम परमार ने जो कि इस विभाग में प्राध्यापक हैं। इसमें उनकी सहायता विभाग के अन्य सभी सदस्यों ने की। नाटक के कोरस की रचना मेरा प्रयास है जिसे संस्थान के कुछ प्रशिक्षार्थियों ने संगीत दिया है।

इन्द्रप्रताप तिवारी
निदेशक

भारतीय मास कम्यूनिकेशन संस्थान,
नई दिल्ली।

पात्र

मस्तराम रंगली	}	सूत्रधार
अमीरा	:	बदमाश और गुण्डा व्यक्ति
गरीबा	:	नेक और शरीफ़ व्यक्ति
गरीबा की स्त्री	:	
यासमीन सईदा	}	गरीबा की लड़कियाँ
लड़का	:	गरीबा का लड़का
स्त्री	:	दुखी परिवार को आश्रय देने वाली स्त्री
व्यक्ति एक व्यक्ति दो	}	बदमाश और गुण्डे का दोस्त
पहला पड़ौसी		
दूसरा पड़ौसी		
युवक एक		
युवक दो		
तथा अन्य पात्र		

मंच-निर्देशन

यह नाटक कठपुतली माध्यम के लिए लिखा गया है, पर इसे खुले मंच पर भी खेला जा सकता है। मंच पर पीछे की ओर एक पर्दा तथा आज़ू-बाज़ू से पात्र-प्रवेश की व्यवस्था काफ़ी है।

कठपुतली के लिए दो पर्दों का उपयोग आवश्यक है। पहला पर्दा, मस्तराम और रंगली आरम्भिक भूमिका के बाद खोलेंगे। शेष पुतलियाँ मंच के दोनों ओर से आ-जा सकती हैं। मौजे वाली पुतलियाँ आसान पड़ेंगी।

एक कठघरा : दो परिवार

(कठपुतली नाटक)

मस्तराम : है नमस्कार भाइयों तुम्हें
है नमस्कार सब बहनों को
जनता को मेरा नमस्कार
जनता के पहरेदारों को

(ढोलक की थाप)

मैं हूँ सैलानी मस्तराम
मैं हिन्दुस्तानी मस्तराम
लो मस्तराम का नमस्कार

रंगली : नमस्कार, भई नमस्कार
सैलानी भाई, नमस्कार
तुम कैसे आज पधारे हो—

(ढोल की थाप)

मस्तराम : हाँ, हाँ, हाँ, तुम बैठो तुम्हें सुनाऊँगा
हाँ, हाँ, हाँ, मैं तुम्हें सुनाऊँगा बैठो—
किस्सा अनहोना मजेदार

रंगली : अनहोना, मजदार कैसा किस्सा ?

मस्तराम : किस्सा है एक कठघरे का
जिसमें रहते ये दो परिवार

रंगली : मस्तराम जी, तुम तो बहुत ख़ुश लग रहे हो। भाई, हमें भी बताओ, क्या हुआ—तुम तो कविता कह रहे हो—जरा साफ़-साफ़ कहो। कैसा कठघरा ? कैसा परिवार ? सीधे-सीधे बताओ—क्या कवि-सम्मेलन से आ रहे हो ? या फिर कहानी सुना रहे हो ?

मस्तराम : अच्छा तो लो सुनो, कहानी नहीं, नाटक : एक था कठघरा। उसके दो कोने में दो ख़ानदान थे—एक था चौकस, ज़बरदस्त, ख़ूँख़्वार और बदमाश। और दूसरा था—सीधा-साधा, शरीफ़ और भला।

रंगली : तो इन परिवारों में क्या रिश्ता था ?

मस्तराम : यही तो बात है। मगर रिश्ता तो था—क्योंकि जबरदस्त कहता था कि उन दोनों का ख़ानदान एक है, ख़ून एक है, भगवान एक है—

रंगली : भगवान एक है ?

मस्तराम : हाँ, हाँ, भगवान एक है।

रंगली : भगवान तो सब का एक है—पर यह कौन-सा नाता ? बात समझ में नहीं आई है। तो फिर—

मस्तराम : तो फिर क्या—जो कुछ हुआ, उसे देख······

(दोनों पर्दा खींचते हैं। मंच पर गरीबा और उसकी स्त्री है)

लड़की : (प्रवेश करते हुए) अब्बाजान, अब्बाजान, वह गुण्डा आ रहा है······

गरीबा : कौन आ रहा है, बेटे ?

लड़की : वही, वही अब्बाजान, वही गुण्डा······वही जो आपको भाई कहता है······जो हमारा ख़ून चूसता है।

गरीबा : वह भाई नहीं, दरिन्दा है······

आवाज़ : (पीछे से) अबे गरीबा, किधर है······

लड़की : अब्बा, अब्बा, वह आ रहा (पीछे से कुत्ता भौंकता है)।

गरीबा : अच्छा, तो वह साला फिर आ गया है ?

गरीबा की स्त्री : सुनो, सलीम के अब्बा, मैं कहती हूँ इस बार इस बदमाश को कुछ भी मत देना। एक पाई भी नहीं······गये साल वह हमारी सारी फ़सल ले गया था······

(अन्दर चली जाती है)

लड़की : अब्बाजान······अब्बाजान······वह अन्दर आ गया······

(अमीरा प्रवेश करता है। उसके साथ कुत्ता है)

अमीरा : (कुत्ता भौंकता है) बैठ बैठ, तू बैठ।······जा बाहर बैठ—(गरीबा से) भई गरीबा, मुझे भूख लगी है। कुछ खाने का इन्तज़ाम कर······

गरीबा : हाँ क्यों नहीं। (घर की ओर मुँह कर के) अरी सुन रही हो, भाईजान भूखे हैं—कुछ खाने का इन्तजाम करो।

गरीबा की स्त्री : (अन्दर से) हाँ, हाँ, सुन लिया है।

अमीरा : भई, तुम ख़ूब आदमी हो—तुम्हारा खाना हमें नहीं भूलता। क्या लजीज़ खाना बनता है तुम्हारे यहाँ······

गरीबा : क्या खाना भाईजान, हम लोग तो गरीब हैं—फिर भी महेमान-नवाज़ी तो हमारे लहू में है।

अमीरा : और भाई, यह तो हमारे भी लहू में है—हमारा तुम्हारा ख़ून एक जो ठहरा। अल्लाह का फज़ल है—हम अहले क़िताब हैं।

गरीबा : अहले क़िताब?—अहले क़िताब क्या होता है?

अमीरा : इसी पर तो हमें ग़ुस्सा आता है—जब तुम ही हमारी बात समझने की कोशिश नहीं करते तो तुम्हारी औलादें कैसे समझेंगी?

गरीबा : ऐसा क्यों कहते हैं भाई अमीरा, हम कौन-सी बात नहीं समझते ?

अमीरा : क्या ख़ाक समझते हो ? तुम्हें मालूम है कि हम क्यों आये हैं ? हम तुम्हारी दावत खाने नहीं आए हैं—हमें रुपया चाहिए—सामान चाहिए।

गरीबा : रुपया कहाँ है भाईजान। रुपया होता तो लड़के को स्कूल से क्यों निकाल लेता ?

अमीरा : कैसा स्कूल ? उसे स्कूल जाने की क्या ज़रूरत है। मेरे बच्चे तो जा ही रहे हैं।

गरीबा : मेरे बच्चों को भी तो जाना चाहिए।

अमीरा : भई, ख़ानदान के सभी बच्चे पढ़-लिखकर क्या करेंगे। कोई पढ़े-लिखे, तो कोई उनकी ख़िदमत करे।

गरीबा : तो मेरे बच्चे क्या करेंगे ?

अमीरा : वे मेरे घर में आकर काम करें। इसमें कौन-सी परेशानी की बात है ?……हाँ तो बोलो, क्या सोचा तुमने।

यासमीन : (अन्दर से आते हुए) चचाजान, आदाब !

अमीरा : कौन है रे यह लड़की ?

गरीबा : यह तो यासमीन है—सलीमा से छोटी ?

अमीरा : अच्छा अच्छा, समझा……

गरीबा : अभी कहा न था। यह भी स्कूल छोड़कर घर बैठी है।

अमीरा : यार तू तो पगला गया है। यह छोकरी को पढ़ाकर क्या करेगा ? मेरे बावर्चीखाने में काम की क्या कमी है !

यासमीन : बावर्चीखाना ? मैं किसी के बावर्चीखाने में काम क्यों करूँ !

अमीरा : बड़ी बदतमीज़ लौंडिया है।

गरीबा : बच्ची है अभी, भाईजान।

अमीरा : बच्ची है अभी ? निकाह हुआ होता तो चार बच्चों की माँ होती—बच्ची कहता है।

गरीबा की स्त्री : (अन्दर से) खाना तैयार है।

गरीबा : (अमीरा से) भाईजान, खाना तैयार है। अन्दर चलेंगे या यहीं मंगवा लूं।

अमीरा : यहीं ला भाई—

गरीबा : (अन्दर की ओर देखते हुए) सलीमा की अम्मा, खाना यहीं ले आओ। भाईजान यहीं बैठक में खायेंगे।

गरीबा की स्त्री : (अन्दर से) मैंने सुन लिया है। ला रही हूँ।

अमीरा : कमबख्त बड़ी भूख लग आयी। जब भी यहाँ आता हूँ, मेरी भूख बढ़ जाती है।

गरीबा : पानी पानी का फ़र्क़ होता है। भूख ज़रूर लगी होगी। बस खाना आया ही जाता है।

(अन्दर से खाना लेकर गरीबा की स्त्री आती है)

गरीबा की स्त्री : आदाब बजाती हूँ, भाईजान !

अमीरा : आदाब !

गरीबा की स्त्री : लीजिए, खाना खाइए।

गरीबा : ला, तश्तरी मुझे देकर एक और ले आ।

गरीबा की स्त्री : इसे सम्हालिए। (तश्तरी देकर अन्दर जाती है)।

गरीबा : (अमीरा की ओर तश्तरी बढ़ाकर) लीजिए, भाईजान।

अमीरा : (खाते हुए) वाह, क्या लजीज़ खाना है।

गरीबा की स्त्री : (दूसरी तश्तरी लाकर देते हुए) लीजिए, आप भी खा लीजिए सलीम के अब्बा !

अमीरा : लाओ, इस खाने को भी इसी तश्तरी में डाल दो—बड़ी भूख लगी है, भाई।

गरीबा की स्त्री : मगर सलीम के अब्बा क्या खायेंगे फिर ?

अमीरा : घर में एक को भूख लगी हो तो क्या घर के सभी खाने बैठेंगे ? बड़ा तेवर दिखा रही है—

गरीबा : भाईजान, तुम तो बड़े मोहब्बती आदमी हो—सुभानअल्लाह, सुभानअल्लाह !

अमीरा : हाँ……हाँ……भाई, इसी को तो रिश्ता कहते हैं। भाई भाई का रिश्ता, बिरादराना रिश्ता……

(एक छोटी लड़की रक़ाबी लेने के लिए अन्दर आती है)

सईदा : बरतन ले जाऊँ, अब्बा……

गरीबा : हाँ, हाँ ले जा……

अमीरा : बड़ी अच्छी लड़कियाँ हैं तेरी—क्या नाम है इसका ?

सईदा : सईदा……

अमीरा : सईदा। अच्छा नाम है—इधर तो आ सईदा। (गले के हार को हाथ लगाकर) गज़ब का हार है ! (हार निकालता है और जेब में रख लेता है) बड़ा अच्छा है……

सईदा : (चिल्लाकर) अब्बाजान, मेरा हार……मेरा हार……अम्मा……

गरीबा : अरे, भाईजान मज़ाक कर रहे हैं सईदा, लौटा देंगे अभी······

सईदा : हाय मेरा हार (रोती है) हुँ······हुँ······

गरीबा की स्त्री : (अन्दर से आकर) क्या हुआ री, रोती क्यों है······क्या हो गया······

अमीरा : कुछ नहीं, कुछ नहीं। यों ही झूठमूठ डर गयी है।

सईदा : मेरा हार, अम्मा जान······हुँ······हुँ

गरीबा की स्त्री : यह क्या तमाशा है? लड़की से ऐसा मज़ाक नहीं करते, भाईजान।

गरीबा : दे न दो भाई, क्या फायदा रुलाने से बच्ची को।

अमीरा : अबे तो इतना चीख़ता क्यों है? ऐसा हार पहनने लायक तेरे बच्चे नहीं हैं। यह हार मेरी बच्ची पहनेगी—वह स्कूल जाती है—वह अच्छे कपड़े पहनती है—तुम बिलकुल नही समझते—कह दिया, हमारा तुम्हारा ख़ानदान एक है—हम भाई-भाई हैं--हमारा ख़ून का रिश्ता है। तुम समझते नहीं······अच्छा तो बताओ, तुमने क्या सोचा है?

गरीबा : क्या सोचा, क्या सोचा, क्या सोचा—हमारी चमड़ी उधेड़गा?

अमीरा : गरीबा, होश में भी है?

गरीबा : कहता है भाई, और खींचता है भाई की खाल। तू मेरी फ़सल ले गया। तूने अगली फ़सल के लिए बचाये हुए बीज तक झपट लिए। आँधी आये, तूफान आये—हम मरे खाने बग़ैर—तुझे इससे कोई मतलब नहीं—दुनिया ने हमें मदद करनी चाही, तो उनका दिया हुआ सामान भी हड़प लिया……समझा, यह घर मेरा है, यह सामान मेरा है……

अमीरा : गरीबा (चीख़कर)……

गरीबा : इस तरह चीख़ते क्यों हैं, क्या मैं ग़लत कह रहा हूँ?

अमीरा : यह घर मेरा है। मेरी मेहरबानी से बना है।

(लड़का आता है)

लड़का : यह हमारा घर है—किसी और का नहीं। इसमें दखल देने का किसी को हक़ नहीं है। यह मेरे अब्बा हैं—यही इसके मालिक हैं।

अमीरा : तू कौन है बे……

लड़का : ख़बरदार—मुँह सम्भाल के बात कर—बहुत हो चुका। भाई-भाई, मुँह में रहीम और बग़ल में छुरी! अब हम सब समझने लगे हैं—

अमीरा : अच्छा, तो यह हिम्मत—सभी धान पक गये—भाई को भूले बैठे—तेवर दिखाने लगे—नहीं जानते……

गरीबा : बस बस, हमें सब मालूम है ?

अमीरा : लगता है, किसी ने बहकाया है। मगर कब तक ! ऐसा सबक़ दूंगा कि छठी का दूध याद आ जायेगा। सारी ज़िन्दगी याद करोगे। बड़े घर वाले बनते हो—

लड़का : यह घर हमारा है, सब कुछ हमारा है।

अमीरा : कुछ नहीं है तुम्हारा—यह ख़ानदान एक है—यह घर हमारा है—इसमें सामान हमारा है—इसकी दीवारें हमारी हैं—छत हमारी है—तुम हमारे हो—हम सब उठा ले जायेंगे······टामी······

(कुत्ता भौंकता हुआ आता है)

लड़का : इस कुत्ते को रोको।

लड़की : अम्मा······

गरीबा की स्त्री : हटाइए इसे······

गरीबा : यह क्या बदतमीज़ी है······

(कुत्ता भौंकता है। काटने की कोशिश करता है)

अमीरा : सब को ऐसा सबक़ दूंगा कि हमेशा याद रहेगा।

लड़की : अरे कुत्ते ने मुझे काट लिया······

गरीबा की स्त्री : इसने पहले भी हमें काटा है……

(कुत्ता भौंकता है। सब पर लपकता है। शोर-शराबे के साथ सब भगदड़ मचाते हुए अन्दर चले जाते हैं)

(मस्तराम और रंगली मंच पर आते हैं)

मस्तराम : देखा रिश्ता—ख़ून का रिश्ता : भाई-भाई का रिश्ता, धर्म का रिश्ता……

रंगली : ख़ूब रिश्ता निकला भाई—वाक़ई, यह अनोखा रिश्ता है !

मस्तराम : अभी क्या, अभी तो और देख……

व्यक्ति एक : (डमरू) लाठियाँ ले लो……लाठियाँ……

रंगली : यह किसी की आवाज है ?

मस्तराम : अरे, यह तो वही है, जो अपने को दुनिया का दोस्त कहता है।

रंगली : दोस्त ! और लाठी बेचता है ?

मस्तराम : सुन, सुन……वह आ रहा है !

रंगली : मगर उसके हाथ लाल रंग से क्यों सनें हैं ?

मस्तराम : अरे, वह ख़ून बहाकर शान्ति कायम करता है……

(दोनों मंच के बायीं ओर चले जाते हैं)

व्यक्ति एक : (डमरू बजाकर बीच में से प्रवेश करते हुए ।) लाठियाँ······नई नई लाठियाँ······बड़े काम की लाठियाँ । भूखों की भूख भगाने वाली लाठियाँ—कमज़ोर को ताकत देने वाली लाठियाँ—रिश्तेदारों का दिमाग़ ठीक करने वाली लाठियाँ—सभी क़िस्म की लाठियाँ, मुफ़्त लुटायी लाठियाँ······

(डमरू बजाते हुए मंच पर आ जाता है)

नई-नई लाठियाँ । छोटी-बड़ी लाठियाँ । दोस्त को दुरुस्त करने के लिए लाठियाँ

(डमरू)

पड़ौसी को पीटने वाली लाठियाँ······मुफ़्त लाठियाँ—लाठियाँ लो, लाठियाँ चलाने वाले भी लो,······सभी मुफ्त······

(डमरू)

ये नई-नई लाठियाँ हैं । ये जनता कीं लाठियाँ हैं—जनता के लिए लाठियाँ हैं—लाठी ही जनता है ।

मस्तराम : पहले तो यह कहता था—सरकार जनता की है—सरकार जनता के लिए है—जनता ही सरकार है, और अब······

रंगली : और अब, इसकी बात से लगता है जैसे न जनता कुछ है, न सरकार—लाठी ही सब कुछ है।

मस्तराम : लाठी सरकार चला सकती है····· लाठी जनता को दुरुस्त कर सकती है······जैसे इन्सान का सहारा सिर्फ़ लाठी है—लाठियाँ ही सब कुछ हैं।

दो-तीन आवाजें : (पृष्ठ से) ओ लाठियों वाले मुखिया, तेरा लाठियाँ बेचना ग़लत है।

तेरा काम ग़लत है—तेरा सोचना ग़लत है।

तू हमारे घर का मुखिया है, पर हम तेरे साथ नहीं—

हम इन्सानियत के साथ हैं—हम न्याय के साथ हैं।

ओरे ओ लाठियाँ बेचने वाले अपना तरीक़ा बदल

हम तेरे साथ नहीं हैं।

मस्तराम : सुन लिया, लाठियाँ बेचने वाले के घर वालों की आवाज़······देखा, कितना ग़लत काम है इसका। कितना ग़लत फैसला है इसका······

व्यक्ति एक : लाठियाँ ले लो······लाठियाँ ही सब कुछ हैं······

व्यक्ति दो : (पृष्ठ से) वह साम्राज्यवादी है……जो लाठी खरीदता है वह भी साम्राज्यवादी है। मैं क्रान्ति चाहता हूँ—मैं क्रान्तिकारी हूँ—मैं गरीबों का साथी हूँ—मैं जनता का साथी हूँ।……तुम सब हरामी हो……सब बदमाश हो……सब चोर हो……

रंगली : यह किसकी आवाज़ है ? यह कौन है ?

मस्तराम : यह कहता है कि यह अमन का पुजारी है लेकिन यह सारी दुनिया को गाली देता है—अमीर को भी गाली देता है—गरीब को भी गाली देता है—हर क़ौम को गाली देता है। इसके पास गालियों का ज़खीरा है।

रंगली : तो इस दुनिया में ऐसे भी लोग हैं। कोई लाठियाँ बेचता है, तो कोई गालियाँ देता है। भई मस्तराम, यह तो अजीब दुनिया निकली……

(पृष्ठ से ही आवाज़ उभरती है)

अमीरा : आज किसी की ख़ैर नहीं, कान खोलकर सुन ले। ये देख मेरे पास कितनी लाठियाँ हैं……मैं कह रहा हूँ मेरी बात मान जा—तूने मेरी बेइज़्ज़ती की है। तुझे इसका मज़ा चखाऊँगा……

(अमीरा बाहर आता है। हाथ में लाठी है। वह लाठी भाँजता है। उसकी पीठ पर और भी लाठियाँ झोले में रखी हैं)

बाहर निकल बे……आज तेरे घर की ईंट-ईंट बजा दूँगा……तेरे घर की छत तक उठाकर ले जाऊँगा।

लड़का : (बाजू से आता है) तू इसे कभी नहीं ले जा सकता। यह हमारा घर है। इसकी एक-एक चीज़ हमारी है।

अमीरा : इसका फ़ैसला मैं करूँगा छोकरे कि यह घर किसका है और अब मुझे क्या करना है।

लड़का : और अब हमें क्या करना है, इसका फ़ैसला हम करेंगे।

गरीबा : तू इस घर की अब एक कील भी नहीं ले जा सकता है। यह घर मेरा है—मेरा पुश्तैनी घर है।

अमीरा : किसने कहा यह तेरा घर है ? कौन है, जो तुझे इस बात के लिए बहका रहा है। मैं उससे भी निपट लूंगा।

गरीबा : सब जानते हैं, यह मेरा घर है।

लड़का : यह हमारा घर है।

अमीरा : कहाँ से आया तेरा घर……यह ले, बड़ा आया अपना घर बताने वाला (लाठी मारता है) यह है तेरा घर……

लड़का : हाय अब्बा……

गरीबा : अमीरा के बच्चे······

अमीरा : तू भी ले (लाठी जमाता है)······

गरीबा : अरे मार डाला साले ने······

(मारपीट बढ़ती है। तभी लड़की भी घर के भीतर से निकलकर बीच में पहुँचती है। उसे भी लाठी पड़ती है)

लड़की : हाय मैं मर गई······

लड़का : ओफ् मेरा हाथ······

(शोर बढ़ता है)

गरीबा : बच्चो, तुम अपनी जान बचाओ······सलीमा, यासमीन, सईदा, करीमा······हट जाओ यहाँ से, एक दम हट जाओ······

लड़का : नहीं, मैं नहीं हटूँगा। मैं इसकी खोपड़ी तोड़ दूं ? यासमीन तू जा······सईदा आ भाग······ क्यों जान गँवाती है। अम्मा इन्हें पड़ौस के घर भिजवा दो······जल्दी करो······

(यासमीन, सईदा और छोटा लड़का बीच में निकल कर कराहते हुए बाजू से चले जाते हैं। साथ ही गरीबा और लड़का पृष्ठ से चले जाते हैं)

आवाजें : (पृष्ठ से ही) हाय : ये ले······और ले······

(लाठियाँ टकराने की और मारपीट की आवाज़ें आती हैं)

(रोते हुए यासमीन, छोटा लड़का और एक दो छोटे लड़के बीच में से निकल कर पड़ौसी की तरफ आते हैं)

बचाओ बचाओ······मेरा सर फूटा······मैं मर गई······गुण्डा, मेरे अब्बा को भी ले गया······

(आवाज़ें आती हैं)

स्त्री : (मंच पर आकर) यह क्या हो रहा है ?

(यकायक मंच पर तीन-चार व्यक्ति और कराहते चीख़ते आते हैं)

लोग : बचाओ बचाओ, हम भूखे हैं—हम मज़लूम हैं—सताये हुए हैं—हमें अपने घर से निकाल दिया गया है······

स्त्री : मगर भाई, यहाँ क्यों, इस घर में क्यों ? तुम लोग तो भाई-भाई थे······

लोग : (कुछ आवाज मंच पर—कुछ पृष्ठ से) हमें बचाओ, हम बेघरबार हो गए—हमें खाना दो—हम भूखे हैं—त्रस्त हैं—

स्त्री : यह तो मानती हूँ भाई, मगर मेरा परिवार भी तो बहुत बड़ा है। वैसे ही मेरे यहाँ भी खाने-कपड़े की कमी है······तुम्हारे लिए मैं कहाँ से लाऊँगी ?

लोग : हम मिट जायेंगे—हमें बचाओ……हम नंगे हैं—हम लुट रहे हैं—हमारी अस्मत लुट रही है……

स्त्री : मगर मुझे अपना घर भी तो देखना है ?……

लोग : मगर आप ही हमें बचा सकती हैं……आपनें हमें नहीं बचाया तो हम मिट जायेंगे—हम नेस्तनाबूद हो जायेंगे। वापस जायेंगे, तो वह हमें मार डालेगा……उसने हमारे अब्बाजान को भी बंदी बना रखा है……उन्हें शायद मक्कार ले गया है……

व्यक्ति एक : (पृष्ठ से आवाज़ लगाते हुए मंच पर नज़र आता है) लाठियाँ……हर मौक़े के लिए लाठियाँ……

स्त्री : ओ रे ओ, लाठी और गाली बेचने वालो, क्या तुम लोगों ने आँख पर पट्टी बाँध रखी है ? तुम्हारा भी कोई फर्ज़ है—इन्सानियत के नाम पर—ज़ुल्म को मिटाने के नाम पर……इन मज़लूमों के लिए क्या तुम्हारे दिल में ज़रा भी दया नहीं है ? क्या तुम उस बदमाश को रोक नहीं सकते ? इन लोगों को घरों से निकाल दिया गया है। इनके पिता को भी वह गुण्डा क़ैद करके ले गया है। क्या तुम इनके पिता को मुक्त नहीं करा सकते ?

व्यक्ति एक : हम क्या करें ? यह इनका आन्तरिक मामला है। यह सब तुमने करवाया है। मगर हमें

क्या……हमें लाठियाँ बेचना है……लाठियाँ ले लो……

दो-तीन आवाज़ें : (पृष्ठ से) ओ रे ओ लाठी बेचने वाले, यह तूने करवाया है। यह तेरी साज़िश है। तेरे हाथ ख़ून से रंगे हैं। तूने ज़ालिम को उकसाया है। तूने हमारे घर की मुखियागिरि में धब्बा लगाया है—हम तेरे साथ नहीं हैं।

स्त्री : सुन, ओ रे ओ लाठियों वाले, सुन अपने घर की आवाज़। उनकी बात सुन—लाठियाँ बेचना बंद कर—

व्यक्ति एक : हीं-हीं……लाठियाँ ले ले……लाठियाँ।

(**पृष्ठ से चीख़-पुकार जारी है**)

स्त्री : (**पड़ौसियों से**) क्या यहाँ कोई और पड़ौसी भी नहीं है? अरे ओ भाई, तुम भी कुछ करो……तुम भी तो इसके पड़ौसी हो? ये तो आते ही चले जा रहे हैं। भला मैं कहाँ तक इनका बोझ उठा सकती हूँ……

पहला पड़ोसी : मगर मैं इनके लिए क्या कर सकता हूँ?

स्त्री : अगर कोई कुछ कर नहीं सकता तो वह गुण्डा तो इनको पूरी तरह से मिटा देगा……अरे ओ भाई, कोई इधर भी देखो……इन बेचारों के घरबार बरबाद कर दिये गये हैं। इनके लिए आपका भी कोई फर्ज़ होता है।

दूसरा पड़ोसी : मगर हम इनके लिए क्या कर सकेंगे ?

पहला पड़ोसी : अगर हम कुछ नहीं कर सके तो यह बदमाश इन बेचारों को ज़रूर मार डालेगा।

दूसरा पड़ोसी : मगर हमारी भी तो दिक़्क़तें हैं।

पहला पड़ोसी : हमें एक प्रस्ताव पास करना चाहिए।

स्त्री : मगर इस समय प्रस्तावों से क्या होगा। इन्हें तो तुरन्त मदद चाहिए। नहीं तो यह गुण्डा इन्हें मार डालेगा।

दूसरा पड़ोसी : मगर यह तो इनके घर का मामला है।

स्त्री : घर का मामला है तो क्या हुआ ? इन्सान की जिन्दगी की कोई कीमत नहीं क्या ? यहाँ ये मारे जा रहे हैं और हम यहाँ चुप बैठे रहें ? क्या किसी को यह समझ में नहीं आता कि ये अपनी जान बचाते हुए यहाँ आ गए हैं।

(बीच-बीच में कराहने की ध्वनियाँ)

पहला पड़ोसी : अगर हम बीच में बोले तो वह गुण्डा तो हमें भी मार सकता है।

दूसरा पड़ोसी : हमारी भी पिटाई कर सकता है।

स्त्री : मगर इसका मतलब यह तो नहीं कि यह पूरी क़ौम की क़ौम मिटा दी जाये—उसे तबाह कर दिया जाये—चौपट कर दिया जाये ......

पड़ोसी : लेकिन…… (लड़ने की आवाज़ आती है)

(अमीरा लाठी घुमाता हुआ मंच पर आता है। साथ ही और कुछ लड़के भी उससे लड़ते हुए आते हैं। बाहर आकर अमीरा स्त्री की ओर लाठी मारने की कोशिश करता है)

स्त्री : यह तो नशे में है। इसे होश नहीं। अब यह मुझ पर भी हमला कर रहा है। हद हो गई! जिसे यह भाई कहता था उसे बचाने का यह नतीज़ा! अच्छा तो लो, तैयार हो जाओ जवानो, बाहर आओ—अब इस मग़रूर को सबक़ सिखाना है—अपना घर बचाना है—अपनी इज़्ज़त बचानी है।

(अन्दर से दो-तीन युवक और निकलते हैं। अमीरा उनकी ओर हाथ बढ़ाता है। एक लड़का उसकी बाहें मरोड़ता है)

अमीरा : (कराह उठता है) ख़बरदार……हाय……मैं तेरा कीमा बना दूंगा।

लड़का : यह ज़ालिम है……गुण्डा है—इसने औरतों को बेइज़्ज़त किया है। इसने मेरे भाइयों का ख़ून बहाया है। इसका यही इलाज है। हम इसे योंही नहीं छोड़ देंगे (अन्य युवक भी अमीरा को धपियाते हैं।)

अमीरा : हाय मैं मर गया……

(दोनों लड़के उसे उठाकर फेंकते हैं। अमीरा का शरीर मंच के बाजू में गिरता है)।

व्यक्ति एक : (पृष्ठ से आवाज आती है) देखा, लाठियाँ कितने काम आयीं। ये लाठियाँ अमन क़ायम करती हैं।

स्त्री : लाठियाँ वो खरीदते हैं जिन्हें अपने पैरों पर भरोसा नहीं—जिन्हें हाथों की ताक़त पर भरोसा नहीं। हमें लाठियों की ज़रूरत नहीं। लाठियाँ वे लेते हैं जो अपनी अक़्ल बेच चुके हैं। इसे चाहे अक़्ल आये या न आये। तुम लोगों को तो तुम्हारा घर मिल गया है—तुम्हें तुम्हारे अब्बा भी मिल जायेंगे। जाओ, अपना घर फिर से बसाओ, तुम्हारा घर ज़िन्दाबाद !

लड़के : आपका घर भी ज़िन्दाबाद।

लड़के : (सब मिलकर) हमारा घर ज़िन्दाबाद !

स्त्री : तुम्हारा घर तुम्हे मुबारक······

(लड़के नारे लगाते हुए अन्दर चले जाते हैं और भी लोग उनके साथ नारे लगाते हुए दूसरी ओर चले जाते हैं)

व्यक्ति एक : (पृष्ठ से) जो मज़बूत बनना चाहे वे लाठियाँ ले······लाठियाँ······

संस्थान के ट्रेडीशनल मिडिया विभाग द्वारा तैयार किये गये अन्य कठपुतली नाटक —

- यह सरकार है
- झगड़ू सिंह
- पारो का ब्याह
- एक था काशीनाथ
- आदमी और दीमक